अकबर के नवरत्न अबुल फजल

डॉ0 मनोज कुमार*

सल्तनत कालीन आरंभिक मुगलकालीन भारत में, दो संस्कृतियों के संघर्ष से जो भयंकर स्थिति चल रही थी उसको सुलझाने के लिए चतुर्दिक इमानदार प्रयत्न की जरूरत थी और प्रयत्न ऐसा कि उसके पीछे कोई दूसरा छिपा उद्देश्य ना हो! संस्कृतियों के समन्वय का प्रयास हमारे देश में अनेक बार किया गया, पर जो समस्या इन शताब्दियों में उठ खड़ी हुई थी, वह उससे कहीं अधिक भयंकर और कठिन थी! अकबर ने इसी महान समन्वय का बीड़ा उठाया और बहुत दूर तक सफल भी हुआ! अकबर का रास्ता आज बहुत हद तक हमारा रास्ता बन गया है। अकबर सोलहवीं सदी का नहीं बल्कि बीसवीं सदी का हमारे देश का सांस्कृतिक पैगंबर है।[1] मुगले आजम अकबर के इस सांस्तिक समन्वय में उनके नवरत्नों का विविध रूपों मे यथेष्ठ योगदान था उसमें भी खासकर फैज, अबुल फजल और उसके पिता शेख मुबारक का योगदान अद्वितीय था।

वाणी के वरद पुत्र, तलवार के धनी, सहृदय एवं धर्मपरायण व्यक्ति अबुल फजल था! मध्य युग की धर्मान्धता, संकीर्णता एवं सांप्रदायिकता की भावना से वह ऊँचा उठा हुआ था![2] सही अर्थों में अकबर के काल से लगभग साढे तीन शताब्दी पूर्व जो भारतवर्ष में मुसलमानों का शासन कायम हुआ था, जिसकी वजह से गैर मुसलमान भारतीय संत्रस्त थे उन्हें अकबरी शासन के अंतिम तीन दशकों में स्वतंत्र रूप से धार्मिक तथ्यों पर मनन चिंतन एवं प्रवचन का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिसका श्रेय बहुत हद तक अबुल फजल और उसके पिता एवं भाई को जाता है।

अकबर महान पुस्तक में बी0एन0 लुनिया ने लिखा है जैसे–कृष्ण, बुद्ध और महावीर के जन्म के समय अभूतपूर्व घटनाएं हुई थी और धारियित्री पर इनके पदार्पण के पूर्व संदेश मिला था उसी प्रकार अकबर के जन्म के पूर्व कतिपय ऐसी घटनाएं हुई जो एक महान विभूति के पदार्पण का संदेश देती है। सहस्त्रों वर्षों से प्रतीक्षा करते हुए स्वर्ग के देवदूतो के नेत्रों से इस बाल सूर्य के 'शुभ उदय से चमक आ गई और सांसारिक आशाओं की ढलती संध्या ने खिलाफत के राजमुकुट के महान मोती से उत्पन्न कीर्ति प्रकाश में प्रभात का सौंदर्य धारण किया।[3] इसी प्रकार हुमायूं ने भी एक प्रतिभा संपन्न पुत्र की पैदाइश का स्वप्न लाहौर में देखा था। शमसुद्दीन अतका खॉ ने भी स्वप्न देखा कि चॉद उसके हाथों पर उतर आया है!

***ग्राम–महद्दीपुर, पोस्ट–ढोली, थाना–सकरा, जिला–मुजफरपुर!**

अबुल फजल ने अकबरनामा में यहां तक लिखा है कि अमरकोट में हुमायूं के कमरे में खिड़कियों से स्वर्गीय प्रकाश आया, जिसमें एक छोटा सा भूभाग प्रकाशित हो गया। इतना ही नहीं अकबर जब हमीदा बानो बेगम के गर्भ में था तो मां की भौहों में एक विशेष चमक आ गई थी।

अकबर की पैदाइश के पूर्व उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट आभासित होता है कि आने वाला व्यक्ति निःसंदेह एक अलौकिक व्यक्तित्व का होगा ! जब हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व और .तित्व का अवलोकन करते हैं तो सही अर्थों में वह 16 वीं सदी का सांस्कृतिक पैगंबर साबित होता है। कहा गया है की संप्रभुता सहायकों पर निर्भर करती है चक्का अकेले नहीं नाचता ! तो स्पष्ट है कि संपूर्ण भारत के इतिहास के प्राचीन काल में चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में नवरत्न पाए जाते है तो मध्यकाल में अकबर महान के राज दरबार में भी नवरत्न थे ! भारत के सारे इतिहास में शेख अबुल फजल की तुलना हम कौटिल्य विष्णुगुप्त से ही कर सकते हैं। कौटिल्य ने चंद्रगुप्त मौर्य के शासन के रूप में भारत को एकताब) करने और उसे समृद्ध बनाने की कोशिश की, यही काम अबुल फजल ने अकबर के समय में किया![4] अबूल फजल ने सदियों से चली आ रही धार्मिक खून–खराबियों से भारत को मुक्त करने में भरसक योगदान दिया!

फैजी के द्वारा अकबर ने रामायण, महाभारत, योगवषिष्ठ और वेदांत का भी फारसी में अनुवाद करवाया था एवं हिंदुओं के बीच इस्लाम के प्रति श्रद्धा जगाने के लिए एक छोटी सी उपनिषद् भी उसने लिखवाई थी जिस का नाम अल्लाहोपनिषद् हैं ! अकबर हिंदुत्व और इस्लाम के बीच जिस समन्वय लाने की चेष्टा कर रहा था उसमें उसका सबसे बड़ा सहायक अबुल फजल था किंतु उलेमा दोनों के खिलाफ थे। इतिहासकार बदांयूनी ने लिखा है कि अबूल फजल संसार को नास्तिकता के जहर से जला रहा है ![5] पृथ्वीराज चौहान के पराजय और फिर 1526 ई0 में मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई, तब से लेकर 1575 ईसवी तक इस्लामिक धार्मिक कट्टरता किसी न किसी रूप से भारत में व्याप्त रही। यों रामानंद, वल्लभाचार्य, चौतन्य, सूर, कबीर, तुलसी सदृश्य एक से एक कवि, सुधारक और महान चिंतक पैदा हुए, जिन्होंने अपनी मेधा, ज्ञान एवं विचारों से समाज को एक नई दशा–दिशा दी। किंतु अकबरी शासन के अंतिम 30 वर्षों में जो धार्मिक समन्वय एवं सर्वधर्म समभाव का श्रीगणेश हुआ उसका श्रेय सीधे तौर पर बादशाह अकबर को जाता है! इसी क्रम में अंकित करना सर्वथा समीचीन प्रतीत होता है कि बादशाह पर समय, काल और परिस्थिति का तो प्रभाव था हीं उसके साथ ही राज दरबार में जो नवरत्न थे वे अपनी–अपनी विद्या के प्रकांड पंडित थे। कुशाग्र बुद्धि के जनक, विद्वता, ज्ञान एवं नम्रता का प्रतिमूर्ति अबुल फजल उन नवरत्नों में एक

थे जिनका बादशाह पर अत्यधिक प्रभाव था। सोते–जागते, बोलते–चलते और यहाँ तक कि कठिनतम परिस्थितियों में भी अबूल फजल से परामर्श लिए बगैर बादशाह प्रायः कदम नहीं उठाते थे। अबूल फजल, उसके पिता शेख मुबारक और अग्रज शेख फैजी ज्ञान गंगा की त्रिवेणी थे! इस त्रिवेणी का प्रभाव बादशाह पर सर्वाधिक था क्योंकि प्रायः बैठकों में बोलने के क्रम में अकबर इस त्रिवेणी की ओर ही मुख करके बोलता था जो साबित करता है कि बादशाह पर इसका गहरा प्रभाव था। त्रिवेणी के तीनों सदस्य कट्टर धार्मिकता के प्रबल विरोधी थे और सर्वधर्म समभाव के महान हितैषी थे। 1575 ईसवी में इबादतखाने पर चढ़कर बादशाह ने जो खुतबा पढ़ा था, जिसके तहत उसने शरीयत को सल्तनत के अधीन कर दिया था जबकि पहले सल्तनत शरीयत के अधीन था। मूलतः इस खुतबा को अबुल फजल के अग्रज शैख फैजी नें तैयार किया था और उसमें अबुल फजल की भूमिका से भी इन्कार नहीं किया जा सकता!

फतेहपुर सिकरी में बादश'ाह के 'शयनकक्ष से मात्र 200 गज की दूरी पर उत्तर दिशा में दो क्वार्टर निर्मित था, जिसमें क्रमशः फैजी और अबुल फजल निवास करते थे। बादशाह के शयनकक्ष सें इतना सन्निकट अबुल फजल का निवास होने का सीधा मतलब निकलता है की आवश्यकतानुसार परामर्श के लिए हर क्षण बुलाया जा सके!

''कबिरा खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ।'' तरुण अबुल फजल का यही मोटो था। बहस होती मुल्ला लोग पुराने बड़े–बड़े आलिमों और धर्मशास्त्रियों के वचन पेश करते। अबुल फजल कहते– अमुक हलवाई, अमुक मोची, अमुक चमार का भी वचन क्यों नहीं पेश करते ? वह किसी बड़े नाम और बात के रोब में आने वाले नहीं थे। जिस बात को बुद्धि और तर्क से मनवाया नहीं जा सकता, उसके लिए उनके दिल में कोई इज्जत नहीं थी। अकबर भी उनके विचारों के साथ था।[6] वह अपने युग में बुद्धि की खान और ज्ञान का सागर था। उसकी स्थायी प्रसिद्धि उसकी ऐतिहासिक विद्वता के कारण है! मध्य युग की साहित्यिक और ऐतिहासिक रचनाओं में अबुल फजल का कार्य सर्वाधिक महत्वशाली है ![7]

अबुल फजल के पूर्वज सदियों पहले अरबवासी थे और कालांतर में सिंध के रेल गॉव (वर्तमान पाकिस्तान) में बसने के उपरांत भ्रमण के क्रम में भारत में नागौर में जम–बस गए और यहीं सन 911 हिजरी में 'शेख मुबारक का जन्म हुआ। शेख मुबारक जीवन की कठिनाइयों एवं आर्थिक समस्याओं से जूझते हुए ज्ञानार्जन के क्रम में सन 1543 में आगरा आए और जमुना नदी के किनारे रामबाग में बस गए ! एक प्रसि) क्युरेश परिवार में शादी की तथा शिक्षण कार्य में लग गए। ख्याति प्राप्त असाधारण विद्वान शेख मुबारक के पुत्र रूप में अबुल फजल का जन्म

छहः मुहर्रम सन 958 हिजरी (1551 ई–) में हुआ ! वह मात्र 15 महीने की अवस्था में स्पष्ट बोलने लगा था तथा 5 वर्ष की अवस्था में उसकी योग्यता का आभास हो गया था। वह 12 भाई बहन था तथा उसका प्रारंभिक जीवन ?घोर आर्थिक संकट में गुजरा। अबुल फजल और उसके अग्रज शैख फैजी पर उसके पिता शेख मुबारक की विद्वता एवं क्षमता का व्यापक प्रभाव तो पड़ा ही बल्कि योग्यता में तो अबुल फजल उनसे कहीं आगे निकल गए। गरीबी की कब्र पर विद्वता का पताका फहराते अबुल फजल की गाथा हर सहृदय व्यक्ति को रोमांचित करती है और इस विद्वता कि कद्र एवं निर्धनता से निजात तब मिलती है जब हिजरी 981 में अग्रज फैजी के बाद अबुल फजल का प्रवेश राजदरबार में होता है। इसकी वाकपटुता, तर्कप्रियता और धार्मिक उदारवादिता से मुल्लागण जल–भून जाते हैं। खासकर जब अबुल फजल बाद'ाह के साथ तोता मैना की तरह बातें करते थे !

अबुल फजल खुदा के द्वार से लेखन कला को अपने साथ लाया था। दरबारे अकबरी में राजकवि फैजी के अतिरिक्त 59 कविगण थें और राज दरबार में विद्वानों की भीड़ थी जिस भीड़ को चीरकर अबुल फजल ने अपना सिक्का जमाया और तीन खंडों में उसने आईने अकबरी ,वं अकबरनामा की रचना की। अकबरनामा का प्रथम एवं द्वितीय खंड आईने अकबरी है, जिसमें अकबर कालीन इतिहास को अंकित किया गया है। तृतीय खंड में अकबर के 18वें वर्ष से 46वें वर्ष के इतिहास को लिखा गया है, जिसे अबुल फजल ने 1597 ई– से 1598 ईसवी के बीच लिखा था ! इतिहासकार इस खंड को अकबर के विस्तृत साम्राज्य का गजेटियर माना है ! यह ग्रन्थ साहित्यिक शैली में है और आईने अकबरी सामान्य भाषा में लिखी गई है, जिसमें उस काल की तमाम स्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। इसकी तीसरी पुस्तक मुकातिवाते अल्लामी पत्रों का संग्रह है और चौथी पुस्तक अय्यारेदानिश संस्कृत भाषा का पंचतंत्र है। छोटे पत्रों के संग्रह के रुप में रुक्आतें अबुल फजल नामक पुस्तक है और छठी पुस्तक कश्कोल है, जो फजल के सुभाषित एवं सुक्तियॉ हैं। सातवी तथा अंतिम पुस्तक रज्मनामा महाभारत का अनुवाद है ! इन सात ग्रंथों और उसमें उल्लिखित तमाम तथ्यों के आधार पर अबुल फजल को मध्यकालीन इतिहासकार के रूप में स्थापित किया गया है।

आश्चर्यजनक लगता है कि एक साथ वह कलम और तलवार दोनों का धनी था। वह साम्राज्य विस्तार के क्रम में अकबर संधि, कूटनीति एवं युद्ध में सदैव व्यस्त रहा। फलतः उसने नौ रत्नों को भी समयानुसार युद्ध में भेजता रहा। महाराजा मानसिंह, टोडरमल, बीरबल और अबुल फजल ने युद्ध क्षेत्र में तलवार का सहारा लिया। मैदान–ए–जंग में बीरबल मारा गया और जंग से लौटने के क्रम में एक साजिश के तहत अबुल फजल को तलवार के घाट उतार दिया गया। अबुल

फजल आसिर विजय में सम्मिलित था। इसी क्रम में जब वह अहमदनगर से सारी व्यवस्था कर लौट रहा था सलीम ने उसका कत्ल करवा दिया !

अबुल फजल एक सफल प्रशासक के रूप में भी कार्य किया। वह दरबार में अति संवेदनशील वजीर था और टोडरमल के बाद प्रधानमंत्री (वकील–ए–सल्तनत) के पद को सुशोभित किया। वह बुरहानपुर में दूत बनकर भी गया था। अपनी प्रतिभा के कारण वह बादशाह का अभिन्न मित्र, परामर्शदाता और वाक्या निगार था। मजहर की घोषणा के बाद अबुल फजल ने शासन तंत्र में आमूल–चूल परिवर्तन लाया। बादशाह की अनुपस्थिति में वह प्रधानमंत्री के रूप में सारे कार्यों का निष्पादन करता था। उसे पांच हजारी मनसब प्राप्त था। मूलतः अबुल फजल एक चिंतक था और राजा को वह ईश्वर की अनुकंपा की देन मानता था। फजल ने अपनी क्षमता और योग्यता की बदौलत अकबर के व्यक्तित्व में गति प्रदान किया। जजिया कर से मुक्ति दिलाने में उसकी अहम भूमिका थी। इस प्रकार वह सही अर्थों में बादशाह का सच्चा हितैषी और कुशल प्रशासक था।

मुगल–ए–आजम अकबर पर अबुल फजल का प्रभाव अवश्य था। सही अर्थों में उलेमाओं के आतंक से ग्रसित भारतीय समाज को मुक्त करने का काम फैजी और अबुल फजल ने किया। चूँकि दोनों भाई विद्वता की चरम पराकाष्ठा पर थे अतः वे हर बिंदु पर तर्क का सहारा लेते थे। युगपुरुष अबुल फजल हिंदू और इस्लाम को कट्टर पोंगापंथियो से मुक्त कराकर भारत में वास्तविक धर्म निरपेक्ष देश बनाना चाहते थे। यो तो बादशाह पर अपने नवरत्नों का स्पष्ट प्रभाव था किंतु कहा तो यहाँ तक जाता है कि अबुल फजल ने अकबर को अपनी मुट्ठी में कर रखा था और बादशाह उसे बहुत अधिक तरजीह देते थे। रात्रि कालीन बैठकों में जिसमें उलेमा, धर्माचार्य, सूफी संत एवं विद्वान शरीक होते थे और विभिन्न विषयों पर चर्चा होती थी उसमें भी अबुल फजल सदैव उपस्थित रहता था। इतना ही नहीं बल्कि अकबर के गुसलखाने में बैठक में भी अबुल फजल शरीक रहते थे।

दीन–ए–इलाही के निर्माण में भी अबुल फजल की महत्वपूर्ण भूमिका थी। धर्मान्धता और कट्टरता से आक्रांत समाज राहत की खोज में था जिसे दीन–ए–इलाही के माध्यम से अकबर ने 1582 ई– में दिया। इसके माध्यम से सही अर्थों में सबको धार्मिक स्वतंत्रता मिल गई और किसी पर धर्म मानने के लिए दवाब नहीं दिया गया। यहां तक कि अकबर ने स्वयं दीन–ए–इलाही मानने के लिए किसी को बाध्य नहीं किया। यो दीन–ए–इलाही को मानने वालों में अबुल फजल और फैजी सबसे आगे थे क्योंकि पर्दे के पीछे से इस कार्य में इनका यथेष्ठ योगदान था। यह बात सही है कि दीन–ए–इलाही का निर्माता अकबर स्वयं था किंतु अबुल फजल दोनों भाई उत्प्रेरक अवश्य थे। हम कह सकते हैं कि वर्तमान काल की

धर्मनिरपेक्षता की बुनियाद अकबर के काल में दी गई जिसकी पृष्ठभूमि में अबुल फजल विद्यमान थे।

'शूल में जन्म लेकर फूल बने अबुल फजल एक इतिहासवेत्ता, उद्भट विद्वान, कुशल राजनीतिज्ञ, निपुण कुटनीतिज्ञ, सक्षम पदाधिकारी, योग्यतम प्रधानमंत्री, सफल सेना नायक एवं धर्मनिरपेक्षता की प्रतिमूर्ति थे ! अफसोस इस बात की है कि असमय शाहजादा की साजिश के शिकार होकर मारे गए जिससे आहत बादशाह ने 2 दिनों तक भोजन त्याग कर शोक के समुद्र में डूब गए। इतनी बड़ी योग्यता, क्षमता, साहस, चतुराई और चिंतक कुछ दिन और जीवित रहता तो भारत के इतिहास में बादशाह के माध्यम से कुछ और दे पाता। प्रतिभा संपन्न अबुल फजल का 1602ई– में अंत हो गया !

संदर्भः

1– राहुल सांकृत्यायन, अकबर, पृष्ठ 11–
2– बी–एन– लूनिया, अकबर महान, पृष्ठ 439–
3– अबुल फजल, अकबरनामा, खंड 4, पृष्ठ 364–
4– राहुल सांकृत्यायन, अकबर, पृष्ठ 95–
5– रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ 306–
6– राहुल सांकृत्यायन, अकबर, पृष्ठ 98–
7– बी–एन– लुनिया, अकबर महान, पृष्ठ 441–

****